गणित
II

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

वर्ष 2018 24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
हिन्दी (विशिष्ट)	0 0 1	हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, म.प्र. भोपाल
SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH
BOARD OF SECONDARY EDUCATION

0552150

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

8	1	6	3	2	9	8	8

शब्दों में

दो	आठ	एक	छः	तीन	दो	नौ	आठ	आठ

एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

क :– पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में 02 शब्दों में दो

ख :– परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 05

ग :– परीक्षा का दिनांक 6/ 3/ 18

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

केन्द्राध्यक्ष
बी.टी.पी. उ.मा. विद्यालय

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
Shrivastava 07/03/18 Narendra Shrivastava	

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
Vinay Singh Rathore (V.A.) Govt.H.S.S. Vijaygram V.No. 13083 Mob. 9406547309	F.EKKA (V.A) G.H.S.S Amravati- Ghat Reg No.12220 Mob.8085030689

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		
कुल प्राप्तांक अंक		

2

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 2 के अंक = कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० (1) का उत्तर

उत्तर -
(अ) (iv) कृष्ण को लेने ।
(ब) (ii) भय में
(स) (i) लाल मणि
(द) (ii) पेड़
(ई) (i) 31

प्रश्न क्र० (2) का उत्तर

उत्तर -
(अ) धरती
(ब) क्षमा अंकुर
(स) सरदवे
(द) मातृभाषा
(इ) प्रबन्ध काव्य

B S E

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 3 के अंक = कुल अंक

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MA

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० (3) का उत्तर

उत्तर

(1) सत्य

(2) असत्य

(3) सत्य

(4) असत्य

(5) सत्य

B S E

प्रश्न क्र० (4) का उत्तर

(अ) दशपुरव

(ब) एकांत

(स) राजरानी देवी

(द) तीन

(इ) छप्पय छंद

4

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 4 के अंक = कुल अंक

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० (ड) का उत्तर

स्तम्भ 'अ' स्तम्भ 'ब'

(अ) मीरा के आराध्य — श्रीकृष्ण

(ब) वापसी — उषा प्रियंवदा

(स) कंस आतंकित था — देवकी का रमोमातीत रूप

(द) गेय मुक्तक — मीरा पदावली

(ई) माता - पिता — द्वन्द्व समास

B
S
E

5

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 5 के अंक = कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० (6) का उत्तर

नाव में पानी भर जाने पर सयानों का कर्तव्य है कि उस पानी को दोनों हाथों से बाहर निकाल देना चाहिए अन्यथा नाव उसी प्रकार डूब जाएगी जिस प्रकार घर में बढ़ा हुआ धन यदि दान आदि कार्यों में खर्च न किया जाये तो वह अपने साथ-साथ घर के स्वामी को भी ले डूबता है।

प्रश्न क्र० (7) का उत्तर (अथवा)

अनेकता में एकता हमारे देश की विशेषता है। यहाँ अनेक रंग-रूप, भाषा-भाषी के लोग रहते हैं। यदि इनमें एकता होती है तो समाज न तो लड़ाई-झगड़े होते हैं व और न ही समाज में बुराईयाँ फैलती हैं। अतः एकता में शक्ति है जो इन्हें आपस में बाँधे रखती है इसलिए कवि वीरेन्द्र मिश्र ने देश वासियों के मिल-जुलकर रहने पर अत्याधिक बल दिया है।

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 6 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० (8) का उत्तर

कवि ने 'अरी सुहागिन' सम्बोधन वैसे तो विवाहित स्त्री के लिए किया है लेकिन प्रकृति की ओर भी संकेत है।

B
S
E

प्रश्न क्र० (9) का उत्तर

माँ सरस्वती की वन्दना देव गण, ऋषि गण, भूत, भविष्य, वर्तमान को जानने वाले उनके पति ब्रम्हा, शिव तथा कार्तिकेय करते है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० (10) का उत्तर

केवट कहता है कि हे प्रभु आपके चरणों की धूल का प्रभाव बहुत विशाल है। मेरी नाव तो लकड़ी की है जो पत्थर से बहुत कमजोर है। केवट की इसी भक्ति भरी मीठी वाणी को सुनकर प्रभु राम को हँसी आ गई।

प्रश्न क्र० (11) का उत्तर (अथवा)

घर खुलते ही लेखक को लगने लगा था कि ताले के खुलने के साथ ही उसके अन्दर भी कुछ खुलता जा रहा है। उसकी यादें ताजा हो रही है। उसके मस्तिष्क में बचपन की स्मृतियाँ जागृत होने लगी।

योग पूर्व पृष्ठ	+	पृष्ठ 8 के अंक	=	कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० (12) का उत्तर

भय और आशंका में निम्न अंतर है-

भय	आशंका
(1) भय में आने वाली विपत्ति का पूर्ण निश्चय रहता है।	(1) आशंका में विपत्ति की शंका रहती है।
(2) भय में घबराहट अधिक रहती है।	(2) आशंका में घबराहट कम होती है।
(3) भय अधिक समय तक नही रहता है।	(3) आशंका अधिक समय तक रहती है।

B
S
E

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० (3) का उत्तर

शरद जोशी के अनुसार अच्छे अध्यक्ष की दो विशेषताएँ निम्न है -

(1) अच्छे अध्यक्ष अध्यक्षता करने से मना नहीं करते।

(2) अच्छे अध्यक्ष न तो बनाए जाते है और न ही चुने जाते है वे तो जन्म जात पैदा होते है।

(3) अच्छे अध्यक्ष हमेशा प्रमुख वक्ता की बात से असहमत रहते है।

B
S
E

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 10 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० (14) का उत्तर

उत्तराखण्ड के प्राकृतिक दृश्यों के सामने न तो काश्मीर के दृश्य और न ही स्विट्जरलैण्ड के दृश्य ठहरते है। काश्मीर के कुछ दृश्य यहाँ से अच्छे हो सकते है परन्तु यहाँ के दृश्यों मे जो धार्मिक भावना दृष्टि गोचर होती है वह अन्यत्र कही नही इसलिए उत्तराखण्ड के प्राकृतिक दृश्य श्रद्धालुओं को आकर्षित करते है।

B
S
E

प्रश्न क्र० (15) का उत्तर

उत्तर :
(i) उसने मुझे कुछ नही कहा।

(ii) भवदीय

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MAE

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० (16) का उत्तर

हास्य रस :-

जब सहृदय के हृदय में स्थित हास नामक स्थायी भाव का संयोग विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव से होता है तब वहाँ हास्य रस की उत्पत्ति होती है।

उदा०

"वह खून कहो किस मतलब का,
जिसमें उबाल का नाम नहीं।
वह खून कहो किस मतलब का,
जो आ सके देश के काम नहीं।"

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (17) का उत्तर (अथवा)

गणेश शंकर विद्यार्थी के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ निम्न है -

(1) सरल एवं सादा जीवन :- गणेश शंकर जी का पहनावा भी सरल एवं सादा था परन्तु उनके विचार उच्च कोटि के थे।

(2) सफल संपादक एवं संचालक :- गणेश जी ने 'प्रताप' पत्रिका का सफल संचालन तथा संपादन किया है। वह भारतवर्ष की एक महत्वपूर्ण पत्रिका बन गई थी।

(3) कुशल राजनीतिज्ञ :- गणेश जी के कानपुर के राजनीतिक जीवन को प्राण थे। उन्होंने वहाँ अर्थात कानपुर में एक चुनाव भारी मतों से एक पूंजीपति को हराया था।

B
S
E

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 13 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

(५) साहित्यकार एवं देशभक्त :-

गांधीजी अंदर से एक सफल साहित्यकार भी थे तथा वे क्रान्तिकारियों की सहायता कर देश को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त भी करना चाहते थे।

प्रश्न क्रमांक (18) का उत्तर (अथवा)

राजभाषा :

राजकीय कामकाज में प्रयोग की जाने वाली भाषा को राजभाषा कहते है।

अंग्रेजी में इसे "ओफिशियल लैंग्वेज" कहते है। हिन्दी सात राज्यों की राजभाषा है जबकि मराठी महाराष्ट्र की तथा तमिल तमिलनाडु की राजभाषा है।

राजभाषा की विशेषताएें :

राजभाषा की प्रमुख विशेषताएें निम्न है-

(1) यह सरकारी कामकाज की भाषा है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

(2) राजभाषा का दर्जा मिलने पर इस भाषा का महत्व बढ़ जाता है।

प्रश्न क्र० (19) का उत्तर

रोला छंद :-
इस छंद में चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 11-13 की यति से 24 मात्राएं होती है। यह एक सम मात्रिक छंद है।

उदा०

जस जैसे

"नीलाम्बर परिधान हरित पट पर सुन्दर है
सूर्य चन्द्र युग मुकुट मेखला रत्नाकर है

नदियाँ प्रेम प्रवाह फूल तारे मण्डल है।
बन्दि जन खग वृन्द शेष फन सिंहासन है।"

B
S
E

(15) [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ　पृष्ठ 15 के अंक　कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० (20) का उत्तर

रिपोर्ताज :-

रिपोर्ताज फ्रांसीसी भाषा का शब्द है। अंग्रेजी शब्द रिपोर्ट से इसका निकट का संबंध है। रिपोर्ट समाचार पत्र के लिए लिखी जाती है। रिपोर्ट मे प्रायः साहित्यक तत्व नही होते है रिपोर्ट के कलात्मक और साहित्यिक रूप को ही रिपोर्ताज कहते है। रिपोर्ताज का विषय कभी कल्पित नही होता है। ~~सत्य~~ :

धर्मवीर भारती एक रिपोर्ताज लेखक है जिन्होंने "युद्ध यात्रा" रिपोर्ताज लिखा है।

रिपोर्ताज की विशेषताएं :-

रिपोर्ताज की प्रमुख विशेषताएं निम्न है-

(1) रिपोर्ताज सत्य एवं वास्तविक घटनाओं पर आधारित होती है।

(2) रिपोर्ताज लेखक को पत्रकार एवं कथाकार दोनों की भूमिका निभानी पड़ती है।

योग पूर्व पृष्ठ	+	पृष्ठ 16 के अंक	=	कुल अंक
		—		

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

(3) रिपोर्ताज आँखों देखी घटनाओं पर ही लिखा जाता है।

प्रश्न क्र० (21) का उत्तर

प्रयोगवाद की विशेषताएँ :- प्रयोगवाद की दो विशेषताएँ निम्न है-

(1) नवीन उपमानों का प्रयोग:- प्रयोगवादी कवियों ने पुराने व प्रचलित उपमानों के स्थान पर नवीन उपमानों का प्रयोग किया है। इनका मानना है कि पुराने उपमान अब बासी पड़ गये है।

(2) लघु मानवाद की प्रतिष्ठा:- प्रयोगवादी कवियों ने मानव से जुड़ी प्रत्येक वस्तु को कविता का विषय बनाया है और उसे प्रतिष्ठा प्रदान की गई है।

B
S
E

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 17 के अंक = कुल अंक

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रयोगवादी कवि — रचना

(1) अज्ञेय - 'हरी घास पर क्षण भर'

(2) धर्मवीर भारती - ठंडा लोहा

(3) भारत भूषण अग्रवाल - ओ अप्रस्तुत मन

B
S
E

प्रश्न क्रमांक (22) का उत्तर

सूरदास

(अ) दो रचनाऐं :-

(क) सूर सागर

(ख) साहित्य लहरी

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 18 के अंक = कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र. (ब) भावपक्ष :-

सूरदास का भाव पक्ष निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट है -

(1) भक्ति भावना :-

सूरदास कृष्ण भक्त थे। इन उन्होंने अपने आराध्य श्रीकृष्ण को आधार बनाकर ही अपनी रचनाओं का निर्माण किया है।

(2) श्रेष्ठ रस संयोजना :-

इन्होंने अपने काव्य में रसों का सुन्दर परिपाक किया है। इन्होंने अपने काव्यों में श्रृंगार, भक्ति तथा वात्सल्य की त्रिवेणी प्रवाहित की है।

(3) अद्वितीय वात्सल्य :-

सूरदास जी वात्सल्य के कुशल चितेरे हैं। उन्होंने वात्सल्य का कोना - कोना झाँका है। इनके वात्सल्य वर्णन जैसा विश्व में अन्यत्र कहीं नहीं है।

कला पक्ष :-

सूरदास का कला पक्ष निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट है -

B S E

19

पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 19 के अंक = कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र

(1) भाषा :-

सूरदास जी की भाषा लालित्य प्रधान ब्रज भाषा है। जिसने काव्य की शोभा को द्विगुणित कर दिया है।

(2) शैली :-

सूर की शैली गेय पद शैली है। इन्होंने मुक्तक रचना की है जो गेयता से भरी पड़ी है।

(3) अलंकारिकता की सहज आवृत्ति :-

अलंकार विधान में सूर का उत्तम कोटि का है। इन्होंने अनेक अलंकारों का प्रयोग किया है।

(4) साहित्य में स्थान :-

सूरदास का हिन्दी साहित्य में स्थान उच्च कोटि का है। वे भक्ति काल की कृष्णा भक्ति शाखा के प्रवर्तक कवि है। इन्होंने वात्सल्य को प्रकट किया अर्थात वे वात्सल्य रस के जनक है वे हिन्दी साहित्य में सूर्य के प्रकाश वान है।

"सूर सूर तुलसी ससी, उडुगन केशवदास
अब के कवि खद्योत सम, जहँ तहँ करत प्रकाश।"

B S E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० (23) का उत्तर

रामनारायण उपाध्याय

(अ) दो रचनायें :-

(क) चतुर चिड़िया
(ख) कथाओं की अन्तर्कथायें
(ग) हम तो बाबुल तोरे बाग की चिड़िया

B
S
E

(ब) भाषा :-

रामनारायण उपाध्याय की भाषा परिमार्जित, प्रौढ़ एवं सुबद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। यथा-स्थान देशज शब्दों के प्रयोग से भी परहेज नहीं किया गया है। यद्यपि भाषा संस्कृत निष्ठ तथा ललित है। इसी कारण विषय का वर्णन प्रधानता सहज एवं स्वाभाविक है। मुहावरे एवं लोकोक्ति के प्रयोग से भाषा में प्रवाह आ गया है। कथन में मुहावरे एवं लोकोक्तियों का सटीक प्रयोग किया गया है। तत्सम शब्दों का भी बाहुल्य है। इनकी भाषा लोक भाषा कहते हैं।

शैली :-

उपाध्याय जी ने विभिन्न शैलियों

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

को अपनाया है -

(1) आत्मव्यंजक शैली :-

उपाध्याय जी ने मैं क्यों लिखता हूँ, निबन्ध में आत्मव्यंजक शैली को अपनाया है। जिससे निबंध में आन्तरिक अनुभूति परिलक्षित हो सकती है।

(2) संवाद शैली :-

संस्मरणों में इन्होंने संवाद शैली को भी अपनाया है। जो कि संबंधों की घनिष्ठता को प्रकट करती है।

(3) व्यंग्य शैली :-

व्यंग्य निबंधों में व्यंग्य शैली को अपनाया है जो हास्यास्पद है।

साहित्य में स्थान :-

उपाध्याय जी लोक संस्कृति पुरुष के रूप में जाने जाते है। हिन्दी साहित्य में उपाध्याय जी के कृतित्व को उनके व्यक्तित्व ने और भी महान बना दिया है। वे हिन्दी साहित्य में अपना उत्कृष्ट स्थान रखते है।

22

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 22 के अंक = कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० (२५) का उत्तर

किसी — — — — — — — — — — — कहते हैं।

सन्दर्भ :-

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्वाति' के 'भय' नामक पाठ से अवतरित है। जिसके लेखक ~~रामचन्द्रशुक्ल~~ "आचार्य रामचन्द्र शुक्ल" जी है।

प्रसंग :-

लेखक ने भय के मनोवैज्ञानिक रूप को प्रकट किया है।

व्याख्या :-

लेखक कहते है कि भय वह है जो हमें आने वाले संकट या विपत्ति के ~~प्रस~~ प्रति होता है। यह एक मनो विकार है। जिसमें व्यक्ति अपने अन्दर इसे बैठा कर डरता रहता है और वह कार्यों के निष्पादन में असफल हो जाता है।

B
S
E

23

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 23 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

यदि भय में क्रोध आता है तो वह दुःख के कारण पर आता है।

काव्य सौन्दर्य :-

(1) भय मनोविकार को परिभाषित किया है।

(2) यह व्याख्या एक मिश्रित वाक्य है।

(3) शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग है।

प्रश्न क्र० (25) का उत्तर (अथवा)

कबीर - - - - - - - - - - - - - - - होय।

सन्दर्भ :-

प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्वाति' के प्रेम के 'नीतिकाव्य' के 'अमृतवाणी' पाठ से अवतरित है। इसके कवि 'कबीरदास जी' है।

प्रसंग :-

कवि ने उदाहरण द्वारा सत्पुरुष की संगति करने को कहा।

24

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 24 के अं = कुल अंक

MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

व्याख्या :

कबीर कहते है कि हमें साधु पुरुषों की संगति करनी चाहिए क्योंकि सत्पुरुषों की संगति से सन्मार्ग पर चलने लगते है। इन्होंने इस कथन को चन्दन और बाँस का उदाहरण देते हुये कहा है कि चन्दन की संगति से सभी वृक्ष खुशबू देने वाले हो जाते है। परन्तु बाँस का वृक्ष भी प्रकृति को नहीं बदलता।

काव्य सौन्दर्य :

(1) संसार के सत्य को प्रतिपादित किया गया है।

(2) भाषा सधुक्कड़ी है।

(3) कथन को उदाहरण द्वारा पुष्टि की गई है।

BSE

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल 4 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम	परीक्षा का दिनांक
हिन्दी (विशिष्ट)	0 0 1	हिन्दी	01 03 18

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

→ परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा
हायर सेकेंडरी परीक्षा

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ ... तक कुल प्राप्तांक [ ] + [ ] = [ ]

B S E

77 प्रश्न क्र० (26) उत्तर

(क) शीर्षक - " मैत्री भाव "

(ख) समाज से अलग मनुष्य के अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती।

(ग) मित्र ऐसा सखा है जो गुरु, माता और सभी के स्थानों की पूर्ति करता है।

प्रश्न क्र० (27) का उत्तर (अथवा)

पृष्ठ के अंकों का योग

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर प्रतिबंध लगाने हेतु आ

"कुंजी से खुल जाते हैं जैसे घर के द्वार।
पत्र प्रकट करता है वैसे मन के सब उद्गार।"

प्रति,
श्रीमान् जिलाधिकारी महोदय,
जिला शिवपुरी (म० प्र०)

विषय:- ध्वनि विस्तारक यन्त्रों को बजाने पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु आवेदन पत्र।

मान्यवर,

उपरोक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि मेरी बोर्ड परीक्षा अत्यन्त नजदीक आ चुकी है। इस संदर्भ में मैं श्रीमान जी का ध्यान आनन्द नगर शिवपुरी की ओर आकर्षित करना चाहिता हूँ। जहाँ मेरे घर के समीप प्रातःकाल से लेकर देर रात तक ध्वनि विस्तारक यंत्र और जोर से बजते हैं। फलतः मुझे वार्षिक परीक्षा की तैयारी करने में समस्या का सामना करना पड़ रहा है।

अतः श्रीमान जी से निवेदन है कि वे अपने अधीनिस्थ कर्मचारी को आदेश दे कर ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर रोक लगायें।

दिनांक - 01/03/2010

प्रार्थी
अ ब स

प्रश्न क्रमांक (२७) का उत्तर (ब)

(ब)

उत्तर:

यातायात की बढ़ती समस्या

रूपरेखा :-

(1) प्रस्तावना
(2) यातायात के साधन
(3) यातायात के नियमों का पालन
(4) यातायात पुलिस का कर्तव्य
(5) जागरूकता की कमी
(6) उल्लंघन पर कठोर दण्ड की व्यवस्था
(7) उपसंहार

" प्रजातंत्र का आधार है सुशासन
जीवन को सुन्दर बनाता है यातायात का
अनुशासन "

(अ)

उत्तर: पर्यावरण प्रदूषण : समस्या और निदान

रूपरेखा :-

(1) प्रस्तावना
(2) प्रदूषण का अर्थ
(3) प्रदूषण के प्रकार
  i) जल प्रदूषण
  ii) वायु प्रदूषण
  iii) भूमि प्रदूषण
(4) समाधान
(5) उपसंहार

" अपनी हालत का एहसास नहीं मुझको
और से सुना है कि परेशाँ हूँ मैं
दुनिया में कुछ इस कदर छाया है प्रदूषण
कि देखकर बेहाल हैरान हूँ मैं "

प्रस्तावना :-

प्रदूषण का वर्तमान स्तर बहुत अधिक है। जो एक स्थान पर नहीं बल्कि विश्व के समस्त भागों में है। इसे मानव ने अपना एक मन

(2)

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

4 पृष्ठीय वर्ष 2018

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम	परीक्षा का दिनांक
हिन्दी (विशिष्ट)	0 0 1	हिन्दी	01 03 18

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे →

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक..........................तक कुल प्राप्तांक ☐ + ☐ = ☐

BSE

बना लिया है। संसार के अंत का कारण प्रदूषण बन सकता है। इसलिए इसका समाधान करना आवश्यक है।

प्रदूषण का अर्थ :-

प्रदूषण से तात्पर्य है कि हमारे वातावरण में अवांछनीय तत्वों का प्रवेश करना है। ये अवांछनीय तत्व वातावरण को बुरी तरह दूषित तथा नष्ट कर देते हैं। जिसका मानव पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। मानव एवं प्रकृति का संतुलन बिगड़ने लगता है।

" धरती पर बढ़ रहा सतत प्रदूषण भार
मनुज अचेत हो रहा कैसे हो उद्धार "

पृष्ठ के अंकों का योग

(3) प्रदूषण के प्रकार :-

पर्यावरण को प्रत्येक प्रकार से प्रदूषित कर दिया गया है इस कारण प्रदूषण के प्रकार भी कई है। जिनमें से कुछ निम्न है-

(i) जल प्रदूषण :-

जल में अवांछनीय तत्वो का मिल जाना जल प्रदूषण कहलाता है। इसका प्रमुख कारण जल स्त्रोतो के पास अवांछनीय कचरा डालना तथा जल स्त्रोतो को खुला रखना जिसमें कचरा सीधे इन में प्रवेश करता है।

" दौलत में डूबा मनुज नहीं जागेगा
जल - वायु प्रदूषण , दूर नहीं भागेगा "

इंदिरा गांधी का कथान है कि -

" धरती को केवल इतना छेडो कि पौधे उग सके इतना मत कुरेदे कि वह रो पड़े "

वायु प्रदूषण :-

वायु क मे अवांछनीय तत्वो

निकलना है। वायु प्रदूषण कारखानों से निकलने वाले हानिकारक धुएं तथा रसायनों, मोटर-कारों के धुएं से फैलता है।

वृक्ष धरा के हैं भूषण करते दूर हैं प्रदूषण। बंजर धरती करे पुकार, वर्षा कम हो वृक्ष हमारा।

(iii) भूमि प्रदूषण :-

भूमि में अवांछनीय तत्वों का प्रविष्ट करना भूमि प्रदूषण कहलाता है।

समाधान :-

इन सभी कारणों का निदान करके ही हम प्रकृति एवं पर्यावरण को उसके मूल रूप में वापस ला सकते हैं। प्रकृति को प्रदूषण से बचाने का हमेशा प्रयास करते रहना चाहिए।

उपसंहार :-

पर्यावरण और मानव का अटूट रिश्ता है। यह रिश्ता केवल एक दूसरे के समन्वय से ही संभव है। अतः मानव और प्रकृति का समन्वय बनाये रखना चाहिए।